Part I Hist.
P. I

CHANDRAGUPTA II की जीवनी और उप...

Question. Discuss The Career & achievements of Chandragupta II

समुद्रगुप्त के पश्चात् चन्द्रगुप्त II सिंहासनारूढ़ हुआ। वह समुद्रगुप्त तथा दत्तदेवी से उत्पन्न पुत्र था। गुप्त वाकाटक वंशीय अभिलेखों में चन्द्रगुप्त II को देवगुप्त तथा देवराज नामों से सम्बोधित किया गया है। सांची के लेखों में चन्द्रगुप्त II को देवगुप्त तथा ... पुत्र नामों से सम्बोधित किया गया है। सांची के लेख में महाराजाधिराज श्री चन्द्रगुप्तस्य देवराज इतिप्रियस्य मिलता है। इससे ज्ञात होता है कि चन्द्रगुप्त का दूसरा नाम देवराज भी था। चामक वाकाटक शिलालेख में इसका अन्य नाम देवगुप्त भी प्राप्त होता है। सन् 375-380 के बीच चन्द्रगुप्त का राज्यारोहण हुआ होगा। अभिलेखों के अनुसार उसकी पत्नी का नाम ध्रुवदेवी था। कुछ इतिहासकारों का विचार है कि चन्द्रगुप्त II तथा रामगुप्त की पत्नी दो भिन्न-भिन्न स्त्रियाँ थी। परन्तु यदि रामगुप्त की कथा पर विश्वास करे तो यह स्पष्ट हो जाता है कि चन्द्रगुप्त ने अपने बड़े भाई की विधवा ध्रुवदेवी के साथ विवाह किया था। अभिलेखों में चन्द्रगुप्त द्वितीय की एक अन्य पत्नी कुबेरनागा का भी उल्लेख मिलता है। कुबेरनागा नाग वंशीय राजकुमारी थी तथा प्रभावती गुप्त की माता थी।

(चामक वाकाटक शिलालेख)

(राज्यारोहण 375-380)

चन्द्रगुप्त द्वितीय के विजयों का उल्लेख किसी एक अभिलेख से प्राप्त नहीं होता, फिर भी उसके द्वारा निर्गत सिक्कों से उसकी विजयों का आभास सरलता से हो जाता है। चन्द्रगुप्त ने पश्चिमी सीमा प्रांत के शकों पर पूर्ण विजय प्राप्त की थी। इस प्रदेश पर ये शक क्षत्रप लगभग 300 वर्ष से अधिक दिनों से शासन कर रहे थे। उसकी यह विजय उसके विश्वविजय अभियान में सर्वाधिक महत्वपूर्ण विजय थी। उसके मंत्री तथा संधिविग्रहिक वीरसेन शक ने उसकी इस विजय का उल्लेख उदयगिरि गुहालेख में किया है। पूर्वी मालवा समुद्रगुप्त के शासनकाल में ही गुप्त शासकों के अधिकार में आ गया था और ...

(पश्चिमी सीमा (शक))

(विजय में उदयगिरि गुहालेख (वीरसेन))

Scanned with CamScanner

इसके उपरांत चन्द्रगुप्त द्वितीय ने इसी प्रदेश को शकों के विरुद्ध युद्ध का आधार बनाया था। उदयगिरि और साँची अभिलेखों से आभास होता है कि चन्द्रगुप्त द्वितीय ने पूर्वी मालवा की विदिशा नामक नगर के समीप अनेक मंत्रियों, सेनानायकों और सामंतों को एकत्रित कर लिया था। शक क्षत्रपों पर अभूतपूर्व ढंग से की गयी। चन्द्रगुप्त इस विजय ने राष्ट्रव्यापी प्रभाव डाला। बाणभट्ट के वर्णन से भी शक क्षत्रपों के पतन का संकेत मिलता है। चन्द्रगुप्त द्वितीय की रजत मुद्राओं की संज्ञा दी जाती है। और इन पर परम भागवत उत्कीर्ण किया गया है। इसके साथ ही "देवीचन्द्रगुप्तम" नाटक के कथानक से भी इन शक शासकों की विजय की ओर संकेत मिलता है।

चन्द्रगुप्त ने स्वामी रुद्रसिंह नामक शक राजा पर विजय प्राप्त की थी। यह शासक क्षत्रप वंशीय था। इसकी रजत मुद्राओं के अनुसार इसने महाक्षत्रप की उपाधि धारण की थी। इसके चाँदी के एक सिक्के पर शक संवत 310 उत्कीर्ण है। जिसके अनुसार इसका शासन 388 ई० के लगभग समाप्त हो गया था।

चन्द्रगुप्त द्वितीय के ~~स्वामी~~ दूसरे उदयगिरि गुहालेख में जिसमें उसे सम्पूर्ण पृथ्वी का विजेता कहा गया है पर इस अभिलेख की कोई तिथि नहीं दी हुयी है। इससे हम यही निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि चन्द्रगुप्त द्वितीय ने इसी यात्रा के ही समय गुजरात तथा काठियावाड़ पर अधिकार स्थापित किया होगा।

चन्द्रगुप्त द्वितीय की मुद्राओं के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारत के पश्चिमी स्थलों पर 409 ई० तक गुप्तों का शासन स्थायी रूप से स्थापित हो गया था। और सम्भवतः इस प्रदेश की सुदृढ़ शासन व्यवस्था उज्जैनी को अपनी राजधानी बनायी थी। राजशेखर के वर्णन से भी इस तथ्य की पुष्टि होती है।

चन्द्रगुप्त की पश्चिमी भारत की विजय के दूरगामी प्रभाव पड़े। इस विजय के परिणामस्वरूप मालवा, गुजरात, सौराष्ट्र अथवा काठियावाड़ गुप्त साम्राज्य के अधीन हो गया। भारत का प्राचीनकाल से ही पश्चिमी देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध रहे है। और इन समस्त प्रदेशों के गुप्त साम्राज्य के अधिकार में आ जाने के परिणामस्वरूप व्यापारिक नियमगण भी गुप्त नरेशों के हाथ में ही आ गये। पश्चिमी तट पर स्थित काम्बे, पोरबन्दर, द्वारका, केम्भवाला, चौल्या आदि अनेक बन्दरगाह गुप्त साम्राज्य के अंग बन गये। पश्चिमी व्यापार के परिणामस्वरूप रोम का सोना भारतीय माल के बदले भारत आने लगा।

बन्दरगाह — काम्बे, पोरबन्दर, द्वारका, केम्भवाला, चौल्या

चन्द्रगुप्त द्वितीय की उत्तरी भारत की विजयों का उल्लेख मेहरौली लौह स्तम्भ से प्राप्त होता है। इस लेख में सम्राट का नाम केवल चन्द्र ही दिया गया है। बलख का मार्ग सिन्धु नदी को पार करके नहीं आता अतः इससे स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि चन्द्रगुप्त द्वितीय ने पंजाब अफगानिस्तान को पारकर बलख तक अपनी रणभेरी बजायी थी तथा शत्रुओं को युद्ध क्षेत्र में पराजित करके अपनी सत्ता की स्थापना की थी।

मेहरौली स्तम्भ लेख के अनुसार राजा चन्द्र ने बंग के युद्ध में अपने पराक्रम से शत्रुओं का पीछा किया। इस वंग शब्द से पूर्वी बंगाल का बोध होता है। चन्द्र ने बंग देश के राजाओं के संघ का सामना किया और उनको पराजितकर यश प्राप्त किया। इस विजय के फलस्वरूप बंग की उपजाऊ भूमि गुप्तवंशीय नरेशों के अधिकार में आ गया तथा देश धन्य-धान्य से परिपूर्ण हो गया। ताम्रलिप्ति के बन्दरगाह से पूर्वी द्वीपों से भी व्यापारिक सम्बन्धों की स्थापना हो गयी।

दक्षिण के साथ सम्बन्ध ⟶ इस समय दक्षिण भारत में नाग वाकाटक तथा कुन्तल वंशीय नरेश शासन करते थे। यह सम्भव है कि समुद्रगुप्त दक्षिणापथ

नाग, वाकाटक, कुन्तल

Scanned with CamScanner

चन्द्रगुप्त कला एवं साहित्य प्रेमी भी था। उसके दरबार के नवरत्नों में कालिदास का उच्च स्थान था। वह बहुत बड़ा दानी इसके समय के गुप्त काल में स्वर्णयुग के नाम से पुकारा गया है। इसके समय में चीनी यात्री फाहियान भारत आया था और भारत का वर्णन किया।

4.

की विजय के लिए जिस मार्ग से गया हो उस वीथपथ से कहीं भी मुठभेड़ न हुयी हो। अतः इनकी शक्ति अबाध रूप से निरन्तर बढ़ती जा रही थी और निःसंदेह समुद्रगुप्त द्वारा विजित प्रदेशों पर ही इसका प्रभाव पड़ा होगा अपने पिता समुद्रगुप्त की नीति का ही अनुकरण करके चन्द्रगुप्त द्वितीय ने दक्षिणापथ के शासकों के साथ कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित किए। अतः चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य ने समुद्रगुप्त द्वारा विजित राज्यों पर अपना प्रभाव बनाये रखने के उद्देश्य से इन शासकों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये। और इस प्रकार नाग, वाकाटक, तथा कुन्तल वंश गुप्तवंश के मित्र बने रहे जिसके परिणामस्वरूप केवल गुप्त साम्राज्य ही अक्षुण बना रहा वरन् इस महान नरेशों की सहायता सदैव ही गुप्त नरेशों को और भी अधिक शक्ति सम्पन्न बनाये रखने में सहायक सिद्ध हुई। चन्द्रगुप्त II के लिए दक्षिण के इन राजाओं के साथ इस प्रकार के सम्बन्ध स्थापित करना इसलिए भी अनिवार्य हो गया था क्योंकि इस समय तक गुप्त साम्राज्य का विस्तार अब पश्चिमी भारत तक फैला था।

इस प्रकार उसका राज्य मालवा, काठियावाड़ से लेकर पूर्व में बंगाल तक विस्तृत था। उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में नर्मदा नदी तक उसका राज्य विस्तृत था। उसकी मुद्राएं बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, पूर्वी पंजाब, मध्य प्रदेश, मालवा, उत्तरी गुजरात तथा काठियावाड़ तक मिलती है। उसके राज्य के अन्तर्गत कच्छ, सोरठ, वेरावल, पोरबन्दर तथा पत्तिपत्तन के प्रदेश सम्मिलित थे। मेहरौली स्तम्भ लेख में राजा चन्द्र के एकाधिराज्य की बात उचित ही जान पड़ती है, इसके अतिरिक्त वाकाटक नाग तथा कदम्ब के राज्य भी उसकी प्रभुता को स्वीकार करते थे।

अपने पिता के समान ही चन्द्रगुप्त

उसका राज्य मालवा काठियावाड़ लेकर पूर्व बंगाल उत्तरी के गुजरात शिलालेख स्थापत्य नर्मदा पत्तिपत्तन कच्छ सोरठ वेरावल पोरबन्दर पत्तिपत्तन

द्वितीय ने भी अनेक उपाधियां एवं विरुद धारण किये
अनेक अभिलेखों में चन्द्रगुप्त को "विक्रमादित्य" नरेन्द्र
चन्द्र तथा नरेन्द्र सिंह आदि कहकर सम्बोधित
किया गया है। इसी प्रकार से कुछ मुद्राओं पर
चन्द्रगुप्त के लिए सिंह चन्द्र और सिंह विक्रम
महाराजाधिराज भट्टारक श्रभांक की उपाधियां
उत्कीर्ण की गयी थी —